डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा चकिया।

B. A. Part - I
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper - II

Date:- 20.02.2023

निराला के काव्यगत वैशिष्ट्य

निराला छायावादी कवि हैं। छायावाद और भारत का स्वतंत्रता आंदोलन समानान्तर चल रहे थे। स्वतंत्रता आंदोलन के युग की मुक्ति चेतना केवल राजनीति के क्षेत्र में ही नहीं, जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी व्याप्त थी- रूढ़ियों की मुक्ति, मध्यकालीन सड़े - गले मूल्यों की मुक्ति, साहित्य में पारम्परिक भाषा, रूपबंध, अलंकार और छन्दों से मुक्ति।

हताश, निराश, पराजय भावना से पराभूत भारतवासियों में आशा, उत्साह एवं आत्मविश्वास जगाने के लिए उन्हें अपने गौरवपूर्ण इतिहास के शूरवीर, बलिदानी महापुरुषों का स्मरण कराया। 'जागो फिर एक बार' कविता में एक ओर वह वीर सिक्खों के शौर्य, पराक्रम एवं बलिदान की याद दिलाते हैं -

"सिन्धु - नद तीरवासी
सैंधव तुरंगों पर
चतुरंग चमूसंग
सवा सवा लाख पर
एक को चढ़ाऊँगा
गोविन सिंह निज
नाम जब कहाऊँगा।

छायावादी काव्य को प्रेम और सौंदर्य

का काव्य कहा गया है। निराला जी को नर-नारी मिलन के रसासिक्त चित्र प्रस्तुत करने में भी कोई आपत्ति या संकोच नहीं है क्योंकि वे उन्मुक्त प्रेम में विश्वास करते है। प्रकृति के माध्यम से नायक-नायिका के मिलन का चित्र 'जूही की कली' में देखते ही बनता है—

"निदर्य उस नायक ने
निपट निठुराई की
कि झोंकों की झाड़ियों से
सुन्दर सुकुमार देह सारी झकझोर डाली
मसल दिये गोरे कपोल गोल--"

छायावादी कवियों ने प्रकृति के सप्राण, सजीव, चेतनासम्पन्न और मानव के सुख-दुःख को सहभागिनी मानकर उसका चित्रण किया। निराला के प्रकृति-चित्रण की विशेषता यह है कि उन्होंने प्रकृति को चेतना सम्पन्न मानकर उसका सजीव चित्रण तो किया है। संध्या को सुंदरी मानकर उसका यह चित्र देखिए—

दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या सुंदरी परी-सी
धीरे, धीरे, धीरे।

निराला ने शोषित वर्ग के प्रति गहरी सहानुभूति का प्रदर्शन किया है। भिक्षुक, तोड़ती पत्थर, विधवा जैसी कविताओं में यह प्रवृत्ति प्रमुख रूप से दिखाई पड़ती है। पूंजीपतियों के प्रति घृणा निराला की 'प्रगति चेतना' से युक्त कविताओं में दिखाई पड़ती है। यथा—

अबे, सुन बे गुलाब
भूल मत जो पाई खुशबू, रंगो आब
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतरा रहा है कैपिटलिस्ट!

'भिक्षुक' कविता में कवि ने भिक्षुक की दीन-दुर्बल दशा का मार्मिक वर्णन किया है—

पेट-पीठ मिलकर दोनों हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक
मुट्ठी भर दाने को
भूख मिटाने को।

निराला काव्य की विषय वस्तु में नवीनता का समावेश करने वाले कवि थे तथा शैली-शिल्प में भी नये प्रयोग करने के पक्षधर थे। छन्द योजना के दृष्टि से भी निराला एक विद्रोही एवं क्रांतिकारी कवि थे।